अध्यक्ष की कलम से

सर्वप्रथम मैं संत सिरोमणि परमहंस देव श्री श्री बापू जी महराज के चरणों में कोटि-कोटि नमन करता हूँ, जिनके स्मित प्रकाश की प्रेरणा से आज से दस वर्ष पूर्व गंगाजल निर्मलीकरण, विश्व प्रसिद्ध गंगा घाटों के सौन्दर्यीकरण एवं काशी के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वरूप की रक्षा और उन्नयन का दृढ़ एवं विशुद्ध संकल्प लिया गया। अनादि काल से भारतवर्ष मानवता का संस्कृति, धर्म एवं आध्यात्म के शाश्वत मूल्यों का सनातन देश रहा है। राम-कृष्ण की अवतार भूमि, ऋषियों-मनीषियों का तपोवन, बुद्ध, महावीर, गुरुनानक और रविदास की साधना भूमि ने सदा से ही विश्व को शान्ति, समृद्धि और अमरत्व का संदेश दिया है। ज्ञान की साधना, कर्म की निरन्तरता, त्याग एवं समर्पण की भक्ति से अमरता में स्थित रहने का विज्ञान ही इसकी अक्षयनिधि है। भारत की इसी पवित्र धरती पर ज्ञान-विज्ञान की विश्व प्रसिद्ध राजधानी के रूप में विख्यात काशी का अस्तित्व वैदिक युग के पूर्व से ही रहा है। काशी को पुराणों में अविमुक्त क्षेत्र कहा गया है।

भगवान विश्वनाथ की नगरी काशी ज्ञान की पुरी है और गंगा ब्रह्मद्रवी है। यही काशी के आध्यात्म सूत्र हैं, सहस्त्राब्दियों से ज्ञान की अनन्त धारा के रूप में काशी में गंगा निरन्तर प्रवाहमान है।

हमारे ऋषियों और मनीषियों ने जहाँ गंगा के पतितपावनी स्वरूप का वर्णन कर गंगा को मानव जीवन के आध्यात्मिक पक्ष से जोड़ा है वही आम आदमी के लिए गंगाजल जीवन है, क्योंकि जल के अभाव में तो मनुष्य के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज हमें शुद्ध जल भी उपलब्ध नहीं है। आधुनिक एक पक्षीय भौतिकतावादी अनियोजित विकास ने हमें प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदना शून्य बना दिया है परिणाम स्वरूप हमने अपने जीवनदायी स्त्रोतों को अपने स्वार्थ की चपेट में लेकर स्वयं ही अपने भावी विनाश को आमंत्रण दे दिया है। प्रकृति हमारी माँ है, क्योंकि माँ वह है जो जीवन देती है जीवन की रक्षा करती है और जीवन सँवारती भी है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए हमने निरन्तर प्रकृति (माँ) पर हमला किया है उसे प्रदूषित किया है। गंगा जल का प्रदूषण भी इसी की एक कड़ी है।

इन्हीं विषम परिस्थितियों में आज से एक दशक पूर्व (१९९२) कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर 'गंगा सेवा निधि' ने स्वच्छ काशी, स्वच्छ गंगा, स्वच्छ घाट व पर्यावरण संरक्षण के लिए जनचेतना जागृत करने के उद्देश्य से एक जनानदोलन प्रारम्भ किया था। तब से लेकर आज तक गंगा सेवा निधि के अन्तर्गत हमने अपने सीमित संसाधनों में विभिन्न कार्यक्रमों चित्रप्रदर्शनी, विचारगोष्ठी, व्यांख्यामाला, भक्तिकथाओं का संयोजन, गंगा की आरती, दीपदान, देवदीपोत्सव गंगा-दशहरा महोत्सव, स्वच्छ काशी, स्वच्छ गंगा संकल्प अभियान, घाटों की स्वच्छता हेतु नित्य श्रमदान इत्यादि के माध्यम से जन-जागरण का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त यह संस्था भारतीय धर्म, दर्शनं एवं संस्कृति, के प्रचार-प्रसार के उन्नयन एवं मूल्यपरक शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा भारतीय संगीत के संवर्द्धन के लिये भी निरन्तर प्रयत्नशील है।

दिसम्बर-जनवरी (१९९९-२०००) में परमार्थ निकेतन ऋषिकेष के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानन्द जी सरस्वती के नेतृत्व में सम्पन्न नूतन सहस्त्राब्दि स्वागत एवं संकल्प समारोह का आयोजन 'निधि' ने किया। जिसमें देशभर के सन्तों परमपूज्य दलाईलामा, पूज्य संत दादा जे.पी. वासवानी, पूज्य रमेश भाई ओझा, पूज्य स्वामी गुरुशरणानन्द, पूज्य जैन मुनि डा. भूपेन्द्र कुमार मोदी, श्री अशोक सिंहल, न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय जी द्वारा स्वच्छ गंगा, स्वच्छ काशी स्वच्छ घाट के साथ-साथ सुन्दर स्वस्थ्य, स्वच्छ और साक्षर भारत के निर्माण की अपील के साथ विश्व शान्ति व कल्याण हेतु प्रार्थना भी की गयी।

वर्तमान में गंगा सेवा निधि काशी के दो प्रमुख घाटों दशाश्वमेध घाट व डॉ. राजेन्द्र प्रसाद घाट को होटल ताज गैंजेस के साथ संयुक्तरूप से आदर्श घाट के रूप में विकसित करने का प्रयास कर रही है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक जागरण की मंगल कामना तथा पर्यावरण शुद्धि के लिए प्रातःकाल पाँच ब्राह्मणों द्वारा नित्य वैदिक यज्ञ तथा प्रातः एवं सायंकाल प्रतिदिन भगवती गंगा की संगीतमय विशेष आरती, भजन संध्या प्रवचन निधि के कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग है। गंगा सेवा निधि की संक्षेप में यही यात्रा कथा है।

विगत दो वर्षों से गंगा सेवा निधि होटल ताज गैंजेस के साथ संयुक्त रूप से प्रसिद्ध औद्योगिक संस्थान हिण्डालको के सहयोग से इण्डियन एअर फोर्स की भागीदारी के साथ त्याग, बलिदान और शौर्य के प्रतीक राष्ट्र रक्षा में प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीदों को समर्पित भव्य देव-दीप महोत्सव का आयोजन कर रही है। ऐसी मान्यता है कि महाभारत युद्ध में प्राण विसर्जित करने वाले भीष्म पितामह एवं अन्य योद्धागणों को कार्तिक मास में दीपमालिकाओं से संतर्पण देने की परम्परा तत्कालीन काशी नरेश ने प्रारम्भ की थी।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।

एभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।।

(संस्कृत वाङ्गमय मन्थन, प्रकाशित १९९९)

गंगा सेवा निधि ने तब से लेकर आज तक के समस्त अमर्त्य वीरों को स्मृति नमन करते हुए इस परम्परा का विस्तार करते हुए इसे वर्तमान से जोड़ा है। देश के इतिहास में यह प्रथम अवसर है कि निधि और होटल ताज गैंजेस संपूर्ण कार्तिक मास की प्रत्येक संध्या में शहीदों के प्रति कृतज्ञता और नमन अर्पित करते हुए दशाश्वमेध घाट पर सोलह आकाशदीप प्रज्ज्वलित कर रहे हैं, जिसका समापन कार्तिक पूर्णिमा पर दिव्य दीपोत्सव कार्यक्रम से होगा।

काशी, गंगा और पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण विषय पर प्रस्तुत स्मारिका में काशी के मूर्धन्य विद्वानों के लेखों के लिए मेरा मस्तक श्रद्धानवत् है। ज्ञानी, मनीषी और चिन्तक ही श्रेष्ठ समाज का निर्माण करते हैं। ऐसे समस्त विद्वानों से मेरा आग्रह है कि आप भविष्य में भी हमें ऐसे ही स्नेह व दिशानिर्देशन दें। गंगा सेवा निधि व होटल ताज गैंजेस के सभी सदस्यों, शुभचिन्तकों का मैं आभारी हूँ जिनके प्रयास व अमूल्य सहयोग से संस्था निरन्तर आगे बढ़ रही है। आप समस्त प्रबुद्ध जनो, श्रद्धालुजनों, समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों से मेरा अनुरोध है कि एक महान लक्ष्य की पूर्ति हेतु आप आगे आयें। जुड़ना और जोड़ना ही भारतीय संस्कृति है। आइये हम सभी भारतीय संस्कृति की अमृत धारा में अपने संपूर्ण अहं का विसर्जन करें। स्वच्छ, स्वस्थ्य दिव्य काशी तथा स्वच्छ गंगा हमारा भावी संकल्प हो, हमारा कर्म हो, हमारा गौरव हो। इस संकल्प से जुड़ने वाले और जोड़ने वाले आप सभी को देव-दीपावली की शुभ कामनाएँ।

भगवान विश्वनाथ और भगवती गंगा से यही प्रार्थना है कि वे हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें जिससे कि 'ज्योतिर्गमय' के उद्देश्य से युक्त इस आलोक पर्व पर अन्तस के अन्धकार को दूर कर हम प्रकाश पथ के गामी बनें।

(सत्येन्द्र मिश्र)

संस्थापक अध्यक्ष